''उपदेश की एक बात''
(13:14-43)

पौलुस और बरनबास तट से उत्तर की ओर पंफूलिया के ख़तरनाक पहाड़ी इलाकों से होते हुए, अन्ततः पिसिदिया के अन्ताकिया में पहुंच गए थे।[1] सीरिया के अन्ताकिया की तरह ही इस अन्ताकिया का नाम सिल्यूकस निकेटर ने अपने पिता, ऐन्टियोकुस प्रथम के नाम पर रखा था। पूर्व से पश्चिम की ओर जाते व्यस्त व्यापारिक मार्ग पर बसा, यह क्षेत्र गलतिया के उस भाग का नागरिक एवं सैनिक केन्द्र था।

नगर में उनके पहले सब्त के दिन, अपनी आदत के अनुसार,[2] पौलुस और बरनबास ''आराधनालय में जाकर बैठ गए'' (13:14)। उपासना का आरम्भ शिमा[3] के उच्चारण से हुआ होगा (व्यवस्थाविवरण 6:4-9): ''हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है! ...'' इसके बाद, प्रार्थनाएं, व्यवस्था में से पाठ, और नबियों की पुस्तक में से पढ़ा गया होगा। फिर पढ़े जाने वाले वचन की व्याख्या और प्रासंगिकता बताई गई होगी। उस उपासना का इन्चार्ज शास्त्र में से पढ़ने वाले (लूका 4:16-20) या उपस्थित लोगों में से कोई भी व्यक्ति प्रवचन दे सकता था।

''और व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की पुस्तक से पढ़ने के बाद सभा के सरदारों ने उन [बरनबास और पौलुस] के पास कहला भेजा, कि हे भाइयो; यदि लोगों के उपदेश के लिए तुम्हारे मन में कोई बात हो तो कहो'' (13:15)। पौलुस और बरनबास को यह अवसर क्यों दिया गया? शायद अतिथियों को यह सम्मान देना इस आराधनालय की प्रथा थी। शायद पौलुस और बरनबास ने अन्ताकिया में कुछ प्रचार किया था, और अधिकारीगण उनकी शिक्षा के सम्बन्ध में सुनने के उत्सुक थे। शायद वे इन दोनों से आराधना से पहले मिले थे, और पौलुस ने गमलीएल की देखरेख में अध्ययन करने का उल्लेख किया हो। हो सकता है कि पौलुस और बरनबास रब्बियों की तरह *दिखते* हों। कारण कुछ भी हो, यीशु के राजदूतों के लिए यह अवसर गंवाने वाला नहीं था।

अधिकारियों ने ''उपदेश की बात'' करने के लिए कहा। यूनानी शब्द का अनुवाद ''उपदेश'' वही शब्द है जिसका अनुवाद प्रेरितों 4:36 में ''शान्ति'' है।[4] (जहां बरनबास को ''शान्ति का पुत्र'' कहा गया था।) तब का समय आज से कठिन समय था, और ''उपदेश की बात'' सदैव क्रम में होती थी (और है)।

उन्होंने उपदेश की बात करने के लिए कहा था, इसलिए उपदेश के पुत्र के लिए इसका उत्तर देना स्वाभाविक ही लगा होगा। परन्तु, पहले खड़ा होकर बोलने वाला, पौलुस था। वह अब एक स्वीकृत अगुआ था।

जब आप किसी प्रचारक से ''*कुछ बोलने*'' या करने के लिए कहते हैं, तो सम्भवत: आपको उससे उपदेश ही मिलेगा और पौलुस इसका अपवाद नहीं था। प्रेरितों 13:16-41 में, हमें पौलुस का पहला लिखित उपदेश अर्थात प्रवचन मिलता है। पौलुस ने बपतिस्मा लेने के शीघ्र बाद ''यीशु का प्रचार... , कि वह परमेश्वर का पुत्र है... और इस बात का प्रमाण दे देकर कि मसीह यही है'' आरम्भ कर दिया था (9:20, 22)। यहां, पहली बार, लूका ने यहूदी आराधनालय में पौलुस के प्रचार के संदेश का एक नमूना दिया।[5]

अन्ताकिया के आराधनालय में पौलुस का उपदेश उत्कृष्ट था। नये वक्ताओं को सिखाया जाता है कि किसी भी प्रवचन के तीन भाग होते हैं: परिचय, मुख्य भाग और सारांश। पौलुस के उपदेश में ये तीनों ही बातें थीं। नौसिखिये प्रचारकों को अक्सर मज़ाक में बताया जाता है कि प्रवचन के मुख्य भाग में ''तीन प्वाइंट और एक कविता'' होनी आवश्यक है। पौलुस का प्रवचन स्वाभाविक ही तीन भागों में बंटता है (हर एक भाग ''भाइयो'' या इसके जैसे किसी हवाले से आरम्भ होता है), और उसने यहूदी कविता से भी उद्धृत किया।

यह देखने के लिए कि उसने अन्ताकिया के नागरिकों को क्या उपदेश दिया और उसकी बातों में आज हमारे लिए क्या उपदेश है, आइए हम पौलुस की ''उपदेश की बातों'' पर ध्यान दें।

नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है! (13:16-25)

पौलुस यहूदियों, यहूदी मत अपनाने वालों, और परमेश्वर का भय मानने वालों (अन्यजाति जो परमेश्वर में विश्वास रखते थे परन्तु अभी यहूदी नहीं बने थे) के सामने खड़ा हुआ था।[6] उसने उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए हाथ से इशारा किया (देखिए 21:40; 26:1) और कहने लगा: ''हे इस्राएलियो, और परमेश्वर से डरने वालो, सुनो'' (आयत 16)।

उस समय के लोग भी आज के लोगों की तरह ही थे और उन्हें अपने बारे में सुनना सबसे अधिक अच्छा लगता था, इसलिए पौलुस ने पहले इस्राएलियों के साथ परमेश्वर के व्यवहार की समीक्षा की:

> इन इस्राएली लोगों के परमेश्वर ने हमारे बापदादों को चुन लिया, और जब ये लोग मिसर देश में परदेशी होकर रहते थे, तो उन की उन्नति की; और बलवन्त भुजा[7] से निकाल लाया।[8] और वह कोई चालीस वर्ष तक जंगल में[9] उन की सहता रहा। और कनान देश में[10] सात जातियों का नाश करके उन का देश कोई साढ़े चार सौ वर्ष[11] में इन की मीरास में कर दिया[12] (आयतें 17-19)।

हमें सभा के सामने स्तिफनुस के प्रवचन का स्मरण आता है, परन्तु वह इससे भिन्न था; स्तिफनुस ने यह दिखाने के लिए कि यहूदियों ने हमेशा परमेश्वर द्वारा भेजे हुए छुटकारा देने वालों को नकारा, इस्राएल के इतिहास की समीक्षा की थी; परन्तु पौलुस ने

यह दिखाने के लिए इस्राएल के इतिहास की समीक्षा की कि इसका उद्देश्य मसीह के आने की तैयारी करना था।

पौलुस ने दाऊद तक पहुंचने के लिए जल्दी से कई वर्षों के इतिहास पर सरसरी नज़र डाली:

> इस के बाद उस ने शमुएल भविष्यवक्ता तक उन में न्यायी ठहराए। उसके बाद उन्होंने एक राजा मांगा:[13] तब परमेश्वर ने चालीस वर्ष के लिए[14] बिनयामीन के गोत्र में से एक मनुष्य;[15] अर्थात कीश के पुत्र शाऊल को उन पर राजा ठहराया। फिर उसे अलग करके[16] दाऊद को उन का राजा बनाया; जिस के विषय में उस ने गवाही दी, कि मुझे एक मनुष्य यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है; वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा[17] (आयतें 20-22)।

यहूदियों को इतनी समझ थी कि मसीह राजा दाऊद के वंश में से ही होगा।

अभी तक, पौलुस के सुनने वाले सिर हिलाते हुए अपने प्रिय और जाने पहचाने इतिहास को सुनने का आनन्द ले रहे होंगे। अब पौलुस ने उनको झटका देना था: ''इसी [दाऊद] के वंश में से परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार[18] इस्राएल के पास एक उद्धारकर्ता, अर्थात यीशु को भेजा'' (आयत 23; तु. मत्ती 1:1)। मैं सुनने वालों के आश्चर्यचकित चेहरों को देख सकता हूं। पौलुस की बातों में दो आश्चर्य थे: पहला ''परमेश्वर ने इस्राएल के पास एक उद्धारकर्ता *भेजा*'' वाक्यांश में वर्तमानकाल का उपयोग था। पौलुस यह दावा कर रहा था कि मसीह सम्बन्धी प्रतिज्ञाएं पूरी हो चुकी हैं! दूसरा आश्चर्य था दाऊद की संतान के रूप में उसका नाम। श्रोता पौलुस से यह सुनने की अपेक्षा करते होंगे, कि ''परमेश्वर ने इस्राएल के लिए एक उद्धारकर्ता, मसीह भेजा।'' इसके स्थान पर ''परमेश्वर ने एक उद्धारकर्ता, अर्थात *यीशु* को भेजा।''

इसमें कोई संदेह नहीं कि पौलुस उनकी परेशानी को देख सकता था और वह उनके अनकहे प्रश्नों को जानता था: ''यीशु? यह यीशु कौन था?'' स्पष्टतया यह प्रेरित जानता था कि वे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले[19] के काम से परिचित थे (शायद उनमें से कई यूहन्ना की सेवकाई के दौरान यहूदिया में गए भी हों[20])। अब उसने उन्हें याद दिलाने के लिए कि यीशु कौन था (और अपना प्रमाण देने के लिए कि यीशु वास्तव में मसीह था), यूहन्ना के शब्द इस्तेमाल किए:

> परमेश्वर ने ... इस्राएल के पास एक उद्धारकर्ता, अर्थात यीशु को भेजा। जिस के आने से पहिले यूहन्ना ने सब इस्राएलियों को मन फिराव के बपतिस्मा[21] का प्रचार किया। और जब यूहन्ना अपना दौर पूरा करने पर था, तो उसने कहा,[22] तुम मुझे क्या समझते हो? मैं वह नहीं! वरन देखो, मेरे बाद एक आनेवाला है, जिस के पांवों की जूती मैं खोलने के योग्य नहीं (आयतें 23ख-25)।

यूहन्ना मसीह का मार्ग तैयार करने के लिए ''एलिय्याह की आत्मा में'' आया (मलाकी 4:5, 6; लूका 1:13-17; मत्ती 11:11-14; 17:10-13)।[23] यदि पतरस के सुनने वालों में से किसी ने यूहन्ना को सुना हो, तो उन्होंने सम्भवत: यीशु के सम्बन्ध में उसकी गवाही को सुना होगा: ''देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना 1:29)! अधिकांश यहूदी मानते थे कि यूहन्ना एक नबी था (मत्ती 21:26); सो यदि पौलुस के श्रोताओं को उसकी बातें याद आई हों, तो यह इस बात को प्रमाणित करने के लिए एक प्रभावशाली परिचय होगा कि यीशु ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह था।

कुछ क्षण पहले मैंने टिप्पणी की कि यहूदी नहीं मानते थे कि इतिहास ''यूं ही बन गया''; वे मानते थे कि इतिहास में *परमेश्वर* अपने उद्देश्यों को रूप देने के लिए कार्य कर रहा था। अपनी आरम्भिक टिप्पणियों में, पौलुस उस सच्चाई पर यह घोषणा करने के लिए काम कर रहा था कि परमेश्वर का अन्तिम उद्देश्य *यीशु* को संसार में लाना था।

आपका तो पता नहीं, परन्तु यह महसूस करना मेरे लिए तो जोश दिलाने वाला है कि परमेश्वर इतिहास में काम कर रहा है, और नियन्त्रण उसके हाथ में है। आम तौर पर हमारा संसार नियन्त्रण से बाहर लगता है।[24] कुछ वर्ष पूर्व, ओक्लाहोमा नगर की अल्फ्रेड पी. मुर्राह फैडरल बिल्डिंग को आतंकवादियों ने उड़ा दिया, जिसमें 169 लोग मारे गए और 400 से अधिक घायल हुए। उससे अगले साल उस क्षेत्र में जहां मैं रहता हूं कलीसिया के दो सदस्यों की नृशंस हत्याएं (बलात्कार और हत्या) हुईं। जब ऐसी हिंसा होती है, तो हम पुकार उठते हैं, ''ऐसा क्यों?'' हम हैरान होते हैं कि परमेश्वर इस प्रकार की त्रासदी क्यों होने देता है। हम अपनी संतुष्टि के लिए हर एक प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाएंगे, परन्तु यह जानना संतोषजनक है कि हमारी समझ सीमित हो, तो भी, नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है। ''इतिहास के बारे में मसीही दृष्टिकोण आशावादी है। यह निश्चित है कि इतिहास हमेशा किसी न किसी प्रकार परमेश्वर के उद्देश्य की ओर ही जा रहा होता है।'' हम जानते हैं कि यदि हम उसके प्रति वफ़ादार रहें तो परमेश्वर दुखांत को विजय में बदल सकता है (रोमियों 8:28)!

मसीह आ चुका है! (13:26-37)

पौलुस ने आराधनालय में लोगों का ध्यान आकर्षित किया था। उसने कहा, ''हे भाइयो, तुम जो इब्राहीम की सन्तान हो, और तुम जो परमेश्वर से डरते हो *तुम्हारे* पास [उसने संभवत: वहां उपस्थित सभी लोगों को शामिल करने के लिए अपना हाथ फैलाया होगा] इस उद्धार का वचन भेजा गया है'' (आयत 26)। परमेश्वर ने अपने समस्त उद्देश्यों के लिए उन सभी को शामिल किया था!

पौलुस जानता था कि उसके श्रोताओं द्वारा ''उद्धार के वचन'' को ग्रहण करने से पहले उसे बड़ी बाधाओं को पार करना होगा। वह भी कभी उनके जैसा ही था जैसे वे अब थे; उसकी पूर्वधारणाएं भी उनके जैसी ही थीं; उसके मन में भी वही संदेह था। बड़ी दिलचस्पी ''क्रूस की ठोकर'' की थी (गलतियों 5:11; तु. 1 कुरिन्थियों 1:23)।

यदि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के उल्लेख से उनकी स्मरणशक्ति को यीशु के बारे में धक्का लगा कि वह कौन था, तो पौलुस के श्रोताओं को यह भी स्मरण होगा कि यीशु को मृत्युदण्ड एक साधारण अपराधी की तरह दिया गया था। अधिकांश यहूदियों के मनों में, यह तथ्य कि यीशु एक रोमी क्रूस पर लटकाया गया था, इसका प्रमाण था कि वह श्रापित था (व्यवस्थाविवरण 21:23; देखिए गलतियों 3:13) और, इसलिए, वह मसीह *नहीं* हो सकता था। पौलुस ने इस मुद्दे पर खुलकर बात की:

> क्योंकि यरूशलेम के रहने वालों और उन के सरदारों ने, न उसे पहचाना, और न भविष्यवक्ताओं की बातें समझीं; जो हर सब्त के दिन पढ़ी जाती हैं, इसलिए उसे दोषी ठहराकर उन को पूरा किया। उन्होंने मार डालने के योग्य कोई दोष उस में न पाया, तौभी पीलातुस से बिनती की, कि वह मार डाला जाए। और जब उन्हों ने उसके विषय में लिखी हुई सब बातें पूरी कीं, तो उसे क्रूस पर से उतारकर[25] कब्र में रखा[26] (आयतें 27-29)।

उल्लिखित और इसके बाद के शब्दों में, हमें पिन्तेकुस्त पर पतरस का प्रवचन स्मरण करवाया जाता है, परन्तु उसमें एक आधारभूत अन्तर था: पतरस ने, यरूशलेम में प्रचार करते हुए, *मध्यम* पुरुष का प्रयोग किया अर्थात उसने कहा, ''उसी यीशु को जिसे *तुम ने* क्रूस पर चढ़ाया'' (2:36)। पौलुस ने, यरूशलेम से दूर प्रचार करते हुए, *अन्य* पुरुष का प्रयोग किया अर्थात उसने कहा, ''(*उन्होंने*) पीलातुस से बिनती की, कि वह मार डाला जाए।''

बुनियादी तौर पर, पौलुस ने दो कारण बताए कि यीशु के मृत्युदण्ड ने उसे मसीह होने के अयोग्य क्यों नहीं ठहराया। पहली बात, यीशु ने मरने के योग्य कोई काम नहीं किया था। उसने कहा, ''उन्होंने मार डालने के योग्य कोई दोष उस में न पाया, तौभी पीलातुस से बिनती की, कि वह मार डाला जाए।'' सभा ने यीशु पर परमेश्वर की निन्दा का दोष लगाया था; किन्तु यदि वह परमेश्वर का पुत्र *था,* तो यह कहना निन्दाजनक बात *नहीं* थी। पीलातुस ने उस पर मुकदमे के समय यीशु पर लगे आरोपों को निराधार बताकर उसे निर्दोष ठहराया। यीशु इसलिए नहीं मरा था कि उसने किसी प्रकार का कोई अपराध किया था, बल्कि इसलिए क्योंकि यरूशलेम के यहूदी उसकी मौत चाहते थे!

परन्तु, यीशु की मृत्यु से उसका मसीह के रूप में अयोग्य न ठहरने का मुख्य कारण यह था कि उसकी मृत्यु ने वचन को पूरा किया। पौलुस ने कहा, ''यरूशलेम के रहने वालों और उन के सरदारों ने, न उसे पहचाना, और न भविष्यवक्ताओं की बातें समझीं; जो हर सब्त के दिन पढ़ी जाती हैं [जैसे पौलुस के बोलने से पहले भविष्यवक्ताओं की बातें पढ़ी गई थीं], ... उसे दोषी ठहराकर उन्हें पूरा किया''; ''उन्होंने [अज्ञानता में] उसके विषय में लिखी हुई सब बातें पूरी कीं।'' पौलुस मसीह के कष्ट एवं मृत्यु के सम्बन्ध में कई भविष्यवाणियों को- यशायाह 53 और भजन संहिता 22 जैसे हवालों को उद्धृत करने के लिए सम्भवत: यहां पर रुका।[27] यीशु को *अयोग्य* ठहराने के बजाय, क्रूस पर उसकी

मृत्यु ने उसे मसीह होने के *योग्य* ठहरा दिया।

अति सामान्य आपत्ति का उत्तर देने के बाद, पौलुस यह बताने के लिए आगे बढ़ा कि यीशु ही मसीह है। उसने मनुष्यों द्वारा यीशु को नकारने की तुलना परमेश्वर द्वारा उसे ग्रहण करने से की। यरूशलेम के यहूदियों ने उसकी मृत्यु मांगी थी, ''परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया'' (आयत 30)। इस बात की पुष्टि से कि यीशु मृतकों में से जी उठा था, वहां उपस्थित सभी लोगों की गर्दनें एक दम तन गई होंगी!

यीशु के पुनरुत्थान का पौलुस द्वारा बताया गया पहला प्रमाण उन बहुत से गवाहों की बात करता है, जिन्होंने उसे जीवित देखा था! ''और वह उन्हें जो उसके साथ गलील से यरूशलेम आए थे, बहुत दिनों तक[28] दिखाई देता रहा; लोगों के साम्हने अब वे ही उसके गवाह हैं'' (आयत 31)। सम्भवत: उसने यहां 1 कुरिन्थियों 15 की तरह पुनरुत्थान के कुछ दर्शनों की बात की थी। यदि ऐसा है, तो नि:संदेह उसने इन शब्दों के साथ समाप्त किया होगा ''और सबके बाद में मुझ को भी दिखाई दिया ...'' (1 कुरिन्थियों 15:8)।

फिर उसने दिखाया कि यीशु की मृत्यु और गाड़े जाने की तरह ही उसका पुनरुत्थान भी भविष्यवाणी का पूरा होना था:

> और हम [पौलुस और बरनबास] तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में, जो बापदादों से [मसीह को भेजने की प्रतिज्ञा] की गई थी, यह सुसमाचार सुनाते[29] हैं कि परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर, वही प्रतिज्ञा हमारी सन्तान[30] के लिए पूरी की, जैसा दूसरे भजन में भी लिखा है, कि तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे जन्माया है (आयतें 32, 33; देखिए भजन संहिता 2:7)।

भजन 2 एक राजसी भजन है, जिसे यहूदियों द्वारा इस्राएल के नये राजा के राज्याभिषेक के समय गाया जाता था। यहां ''जन्माया'' का हवाला जन्म के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर का नये राजा को अपने विशेष ''पुत्र'' के रूप में मान्यता देना है। यहूदी लोग भजन संहिता 2 अध्याय को मसीह सम्बन्धी भजन मानते थे, जो आंशिक तौर पर सांसारिक राजाओं में पूरा हुआ परन्तु सम्पूर्ण तौर पर और अन्त में उसे मसीह ने पूरा किया। पौलुस ने सम्भवत: मसीह के राज्याभिषेक को कालांतर में दी गई प्रसिद्ध प्रतिज्ञाओं के साथ जोड़ा कि मसीह के लिए दुख उठाना और मरना जरूरी था: यदि मसीह को मरना था और उसके बाद महिमा के साथ मुकुट पहनना था, तो मृतकों में से उसका *जी उठना* आवश्यक था। रोमियों 1:4 में पौलुस के शब्द भजन संहिता 2 से उसके तर्क की बहुत अच्छी व्याख्या है: यीशु ''पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।''

उसके बाद, पौलुस ने यशायाह 55:3 का हवाला दिया: ''और उसके इस रीति से मरे हुओं में से जिलाने के विषय में भी, कि वह कभी न सड़े, उस ने यों कहा है; कि मैं दाऊद पर की पवित्र और अचल कृपा तुम पर करूंगा'' (आयत 34)। ''दाऊद पर की पवित्र और अचल कृपा'' इस प्रतिज्ञा में केन्द्रित है कि परमेश्वर मसीह को दाऊद के सिंहासन पर

बिठाएगा। पौलुस का तर्क वही था जो पहले था, यदि मसीह ने मरना था और फिर उसके बाद शासन करना था, तो मृतकों में से उसका जी उठना भी आवश्यक था।

पौलुस ने अपना तर्क इसी आयत (भजन संहिता 16:10) के साथ और उसी तर्क के साथ समाप्त किया, जो पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने दिया था:

> इसलिए उसने एक और भजन में भी कहा है; कि तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा। क्योंकि दाऊद तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने समय में[31] सेवा करके सो गया; और अपने बापदादों में जा मिला; और सड़ भी गया। परन्तु जिसको परमेश्वर ने जिलाया, वह सड़ने नहीं पाया (आयतें 35-37)।

यह बात कि ''तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा,'' दाऊद अपने लिए नहीं कह सकता था, क्योंकि उसका शरीर सड़ गया *था;* इसलिए, उसके शब्द यह भविष्यवाणी करते थे कि *मसीह* का शरीर मृत्यु के बाद सड़ेगा नहीं जो कि पुनरुत्थान के लिए आवश्यक था।[32]

फिर पौलुस ने सम्भवत: जीती हुई बाज़ी फिर से लगाई क्योंकि मसीह ने मृतकों में से जी उठ कर महिमा पानी थी और यीशु के साथ बिल्कुल वैसा ही हुआ था, इसलिए सारांश यह था कि यीशु ही मसीह था!

मैं इससे अधिक उत्साह की बात को नहीं जानता कि मसीह आ चुका है! जैसे सुबह का सूर्य रात के अन्धेरे को छितरा देता है, उसी प्रकार यीशु का बोध हमारे मनों के अंधकार को छितरा देता है। वह परमेश्वर का पुत्र, जगत का उद्धारकर्ता आ चुका है, बुरी ख़बर सुर्खियां बन सकती है परन्तु अच्छी ख़बर से हमारे मन शांत होने चाहिए!

आपका उद्धार हो सकता है! (13:38-41)

पौलुस इसे सुनने वालों के लिए प्रासंगिक बनाने के लिए तैयार था:

> इसलिए, हे भाइयो; तुम जान लो कि इसी के द्वारा[33] पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता है। और जिन बातों से तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा[34] निर्दोष नहीं ठहर सकते थे, उन्हीं सब से हर एक[35] विश्वास करने वाला उसके द्वारा निर्दोष ठहरता है (आयतें 38, 39)।

एक ईमानदार यहूदी के लिए यह मानना आवश्यक था कि ''अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे'' (इब्रानियों 10:4)। यिर्मयाह नबी ने मूसा की व्यवस्था की कमियों को लिखकर स्वीकार किया, ''यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से *नई* वाचा बांधूगा'' (यिर्मयाह 31:31)। उस नई वाचा (मसीह की नई वाचा [अर्थात नये नियम]) की विशेषता यह होनी थी कि पाप क्षमा करके फिर उन्हें पापी नहीं ठहराना था: ''यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा

करूंगा और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा'' (यिर्मयाह 31:34ख)।

अन्त में लोग *स्वतन्त्र* हो सकते थे: न केवल पुरानी व्यवस्था के प्रतिबन्धों से; बल्कि पाप से, दोष से, वह सब बनने के लिए स्वतन्त्र हो सकते थे जो परमेश्वर उन्हें बनाना चाहता था! यदि आपके विवेक ने उस पाप के लिए जो आपने किया है, आपको कभी निर्दयतापूर्वक दण्ड दिया है, तो आप जानते हैं कि यह समाचार कितना अद्‌भुत है!

पौलुस के श्रोताओं के लिए यह एक अच्छी ख़बर थी, परन्तु यदि वे परमेश्वर के प्रबन्ध का लाभ न उठाते तो उनके लिए एक बुरी ख़बर भी थी। पौलुस के ''उपदेश की बात'' के अन्त में मैं उसके चेहरे पर उदासी देख सकता हूं: ''इसलिए चौकस रहो, ऐसा न हो, कि जो भविष्यवक्ताओं की पुस्तक में आया है, तुम पर भी आ पड़े'' (आयतें 40, 41क)।[36] पौलुस के बोलने से पहले, नबियों की बातों में से पढ़ा गया था। उसके सुनने वाले यह अच्छी तरह जानते थे कि भविष्यवक्ताओं ने बार-बार परमेश्वर का मार्ग ठुकराने वाले उन लोगों पर पड़ने वाले उसके *शाप* की बात की।

पौलुस ने हबक्कूक की पुस्तक में से ''बताई गई बातों'' का एक उदाहरण दिया:[37] ''कि हे निन्दा करने वालो, देखो, और चकित हो, और मिट जाओ; क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक काम करता हूं; ऐसा काम, कि यदि कोई तुम से उसकी चर्चा करे, तो तुम कभी प्रतीति न करोगे'' (आयत 41ख; देखिए हबक्कूक 1:5)। हबक्कूक के दिनों में अपने लोगों को दण्ड देने के लिए मूर्तिपूजक कौम (बाबुल) को भेजना परमेश्वर का विस्मयकारी ''काम'' था। इस्राएलियों को विश्वास नहीं था कि यह सम्भव हो सकता था- और बाबुल-वासियों के देश में घुसने के कारण बहुतों का नाश हो गया। हबक्कूक के दिनों में परमेश्वर का अद्‌भुत काम शाप देना था; पौलुस के दिनों में, मसीह को भेजने का परमेश्वर का अद्‌भुत काम आशीष देना था। तथापि परिणाम एक समान ही था: ''निन्दा करने वालों'' का जिन्होंने परमेश्वर के संदेशवाहक (पौलुस) का विश्वास करने से इन्कार कर दिया, नाश होना था!

अब तक पौलुस ने अपनी ''उपदेश की बात'' पूरी कर दी थी। उसने यीशु को मसीह के रूप में मानने की अनिवार्यता पर ज़ोर दिया था, किन्तु उसने मन फिराव की आज्ञा नहीं दी थी अर्थात यीशु का अंगीकार करने और बपतिस्मा लेने के महत्व की व्याख्या नहीं की थी।[38] आरम्भ में उसने अपने श्रोताओं में रुचि जगाने, विचार पैदा करने और विश्वास के मार्ग पर चलाने का यत्न किया था। उन लक्ष्यों को पूरा करके वह बाद में अपनी बात मानने वालों को उपदेश देने के लिए इसे आधार बना सकता था!

सारांश

और उत्साहित करने वाली बात की इन सच्चाइयों से अधिक हम क्या कल्पना कर सकते हैं? जीवन से हार चुके लोगों के लिए हम घोषणा करते हैं, ''नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है!'' अनिश्चितता से हार चुके लोगों के लिए, हम ऐलान करते हैं, ''मसीह आ चुका है!'' पाप से दबे हुओं के लिए हम घोषणा करते हैं, ''आपका उद्धार हो सकता है!''

पौलुस के प्रवचन को फिर से देखें, तो हम देख सकते हैं कि उपदेश की बातों की ये सभी सच्चाइयां *यीशु* पर ही केन्द्रित हैं। रिक ऐचले ने पौलुस के पाठ के प्रथम भाग को ''यीशु, इतिहास का केन्द्र बिन्दु''; दूसरे भाग को ''यीशु, इतिहास की परिपूर्णता''; और तीसरे भाग को ''यीशु, अपराध क्षमा करने वाला'' कहा है। पौलुस ने बाद में ''मसीह में ... ढाढ़स'' के बारे में लिखा (फिलिप्पियों 2:1)। यदि आपको उपदेश की आवश्यकता है, तो आपको यीशु के साथ निकट सम्बन्ध बना लेना चाहिए!

अगले पाठ में हम पौलुस के श्रोताओं द्वारा उसकी बात मानने के बारे में पढ़ेंगे। तथापि अब के लिए मुझे *आपके* उत्तर में अधिक रुचि है। यदि आपके लिए अपने जीवन में यीशु को प्रभु मानने और सभी बातों में उसके आगे समर्पण करने की आवश्यकता है, तो *अभी* समय है।

प्रवचन नोट्स

जैसे मैंने प्रेरितों 7 में स्तिफनुस के प्रवचन के साथ किया था, मैं मान लेता हूं कि प्रेरितों 13 में पौलुस द्वारा पुराने नियम की घटनाओं को विस्तार से बताने की बात से मेरे श्रोता परिचित हैं और उन्हें विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं। यदि *आपके* सुनने वाले उनसे परिचित नहीं हैं, तो आप समय निकालकर उन्हें पुराने नियम की पृष्ठभूमि बता सकते हैं। मैंने आपकी तैयारी आरम्भ करने के लिए पुराने नियम के कुछ हवाले शामिल किए हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]यह अन्ताकिया वास्तव में, पिसिदिया की सीमा के निकट फ्रुगिया में था। इसे फ्रुगिया के अन्ताकिया से अन्तर करने के लिए पिसिदिया का (या निकट, या की ओर) अन्ताकिया कहा जाता था। [2]देखिए प्रेरितों 13:5; 14:1; 17:1, 10, 17; 18:4, 19; 19:8। [3]''शिमा'' ''सुनने'' के लिए पवित्र शास्त्र के पाठ में प्रथम इब्रानी शब्द है। [4]शब्द का अनुवाद ''सांत्वना'' अथवा ''दिलासा'' भी हो सकता है। [5]यदि पौलुस के उत्तर ही शामिल हों, तो प्रेरितों के काम में उसके पांच प्रवचन दर्ज हैं। यह सबसे लम्बा (छब्बीस आयतें) और यहूदी आराधनालय में उसका एकमात्र प्रवचन है। [6]यीशु आराधनालय में बैठकर शिक्षा देता था (लूका 4:20, 21), परन्तु स्पष्टतया पौलुस खड़ा था। हम इस भिन्नता का कारण नहीं जानते। शायद यीशु और पौलुस ने भिन्न प्रकार के संदेश दिए थे, जिसमें हर एक के ''नियम'' अलग थे। शायद फलस्तीनी आराधनालय की रीतियां फलस्तीन के आराधनालय से भिन्न थीं। [7]यह मानवीकरण की एक अभिव्यक्ति है, जिसका अर्थ है ''बड़ी सामर्थ के साथ।'' [8]निर्गमन 6:1, 6; भजन संहिता 136:11, 12। [9]व्यवस्थाविवरण 1:31; 32:10। [10]व्यवस्थाविवरण 7:1।

[11]अनुवादित वाक्यांश ''कोई साढ़े चार सौ वर्ष'' कठिनाई उत्पन्न करता है। यदि हिन्दी का अनुवाद सही है, तो इन 450 वर्षों में मिसर में रहना (400 वर्ष), जंगल में घूमना (40 वर्ष) और देश पर विजय पाना (लगभग 10 वर्षों से अधिक) शामिल हैं। [12]यहोशू 14–19। [13]1 शमूएल 8:5–9। [14]इस तथ्य की कि शाऊल ने चालीस वर्ष तक राज्य किया, जानकारी पुराने नियम में नहीं मिलती। [15]पौलुस यहां कहने के लिए रुका होगा कि, ''मेरा भी इब्रानी नाम शाऊल है और मैं भी बिनयामीन के गोत्र से हूं।'' [16]1 शमूएल 15:26।

[17]पुराने नियम में यह हवाला ठीक-ठीक नहीं मिलता, परन्तु 1 शमूएल 13:14 और भजन 89:20 में इसका भावार्थ मिलता है। [18]2 शमूएल 7:12; भजन संहिता 132:11; यशायाह 11:1-16। [19]यदि वे यूहन्ना के काम से परिचित नहीं थे, तो पौलुस की बातों का कोई प्रभाव नहीं था। उनके साथ एक आरम्भिक बातचीत में (शायद उपासना से पहले) शाऊल को यूहन्ना के बारे में उनके ज्ञान का पता चला होगा, या हो सकता है कि उसे यह पता आत्मा के प्रकाश से चला हो। [20]शायद यूहन्ना का कोई चेला उस क्षेत्र में आया, जैसे बाद में अप्पुलोस इफिसुस में गया (18:24-19:4)।

[21]यूहन्ना के बपतिस्मे को ''मन फिराव का बपतिस्मा'' कहा जाता है, क्योंकि इसमें मन फिराव सम्मिलित और व्यक्त था। ग्रेट कमीशन (महान आज्ञा) के बपतिस्मे को ''विश्वास का बपतिस्मा'' कहा जा सकता है, क्योंकि इस में हमारा वह विश्वास सम्मिलित और व्यक्त है जो हम यीशु में करते हैं। [22]सुसमाचार के वृत्तांत यह नहीं बताते कि यूहन्ना ने ये शब्द ठीक-ठीक कब कहे, परन्तु उनका भावार्थ मत्ती 3:11; मरकुस 1:7; लूका 3:15, 16; और यूहन्ना 1:19, 20, 27 में मिलता है। [23]यहून्ना यह कहकर कि वह एलिय्याह *नहीं* था (यूहन्ना 1:21), अधिकांश यहूदियों के इस विश्वास की बात कर रहा था कि मसीह के आने से पहले एलिय्याह मृतकों में से जी उठेगा। यूहन्ना ''एलिय्याह की आत्मा में'' आया, परन्तु वह जी उठा, एलिय्याह नहीं था। [24]अविवेकी उपद्रव जो स्थानीय मण्डली की रुचि है, के उदाहरण यहां दिए जा सकते हैं। [25]मूलत:, शास्त्र में ''वृक्ष'' अथवा ''काठ'' है। [26]पौलुस ने यीशु के शत्रुओं द्वारा उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने और यीशु के मित्रों द्वारा उसे गाड़ने के कार्य में भिन्नता नहीं की। ये सभी कार्य यरूशलेम में *यहूदियों* के द्वारा किए गए थे और उन सब से *भविष्यवाणी पूरी हुई*। [27]सामान्य की भांति, लूका ने प्रवचन का संक्षिप्त रूप दिया। यीशु के पुनरुत्थान के दर्शन चालीस दिनों के भीतर हुए (1:3)। [29]''सुसमाचार सुनाते हैं'' का अनुवाद एकमात्र यूनानी शब्द से हुआ है, जो कि ''सुसमाचार'' के लिए यूनानी शब्द का क्रिया-रूप है। [30]मूलत: यूनानी में ''हमें जो संतान हैं'' है।

[31]किसी मनुष्य के लिए इससे बढ़कर कोई और स्मृति-लेख नहीं दिया जा सकता कि ''उसने अपनी पीढ़ी में परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा किया''! [32]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 63 और 64 पर 2:27 पर नोट्स देखिए। [33]मूलत:, शास्त्र में *''उसी में''* है। पौलुस उनके मनों को बपतिस्मे के लिए तैयार कर रहा था जो किसी को ''मसीह में'' लाता है (रोमियों 6:3; गलतियों 3:27)। [34]मूलत:, शास्त्र में ''व्यवस्था *में*'' है। [35]''हर एक'' शब्द को भूलें नहीं। इसमें अन्यजातियों को शामिल किया गया है। [36]यह सुझाव दिया गया है कि पौलुस ने इस नकारात्मक टिप्पणी के साथ समाप्त किया क्योंकि उसने उपस्थित लोगों में से बहुतों के चेहरों पर अस्वीकृति देखी। यह सत्य भी हो सकता है और नहीं भी। चेतावनी पौलुस के प्रचार का अभिन्न अंग थी (20:31)। [37]यह उद्धरण सप्तति अनुवाद से लिया गया है। [38]पौलुस निश्चय ही बपतिस्मे की अनिवार्यता में विश्वास रखता था (रोमियों 6:3, 4; गलतियों 3:26, 27), परन्तु स्पष्टतया वह यह विश्वास नहीं रखता था कि उसकी आरम्भिक टिप्पणियों में बपतिस्मे का उल्लेख अनिवार्य था। किसी के साथ अध्ययन करते समय, मैं पहली बार मिलने पर कभी भी उद्धार की शर्तों का उल्लेख नहीं करता।